प्रारंभिक शिक्षा

ELEMENTARY EDUCATION

प्रारंभिक शिक्षा किसी भी समाज या देश के लिए सबसे महत्वपूर्ण होती है क्योंकि यह शिक्षा की नींव या आधार को स्थापित करती है। सामान्य तौर पर प्रारंभिक शिक्षा को भारत में प्राथमिक शिक्षा के रूप में जाना जाता है। भारत में प्रारंभिक शिक्षा 6 वर्ष की आयु से शुरू होती है और 14 वर्ष की आयु में पूर्ण होती है। प्रारंभिक शिक्षा कक्षा 1 से कक्षा 8 तक की शिक्षा को कहा जाता है। प्रारंभिक शिक्षा को दो भागों में बांटा जाता है : - निम्न प्राथमिक शिक्षा (कक्षा एक से कक्षा 5 तक) और उच्च प्राथमिक शिक्षा (कक्षा 6 से कक्षा 8 तक) । शिक्षा से संबंधित प्रत्येक योजना , उदाहरण के रूप में - प्रत्येक पंचवर्षीय योजना , राष्ट्रीय शिक्षा नीति , 1986 और संशोधित राष्ट्रीय शिक्षा नीति , 1992 **प्रारंभिक शिक्षा के सार्वभौमीकरण** पर जोर देती रही है। परंतु **नि:शुल्क और अनिवार्य शिक्षा के अधिकार अधिनियम , 2009** ने प्रत्येक बच्चे को प्रारंभिक शिक्षा को नि:शुल्क रूप में और अनिवार्य रूप में ग्रहण करने का अधिकार प्रदान किया है।

प्रारंभिक शिक्षा के सार्वभौमीकरण को सुनिश्चित करने के लिए केंद्र सरकार और राज्य सरकार के द्वारा बहुत सारे कार्यक्रम चलाए गए हैं - ऑपरेशन ब्लैक बोर्ड , मध्याह्न भोजन योजना आदि।

विद्यालयी शिक्षा और साक्षरता के क्षेत्र में केंद्रीय विद्यालय संगठन एक प्रतिष्ठित संस्थान है। केंद्रीय विद्यालय संगठन ने अपने स्तर पर प्रारंभिक शिक्षा के सार्वभौमीकरण के लिए अनेक कार्यक्रम चलाएं हैं। केंद्रीय विद्यालय संगठन विद्यार्थियों में संप्रत्यय के अधिगम करने पर जोर देता है। केंद्रीय विद्यालय संगठन में एनसीईआरटी के द्वारा बनाए गए लर्निंग आउटकम्स (अधिगम प्रतिफल) के आधार पर शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया को संचालित किया जाता है। प्रत्येक केंद्रीय विद्यालय में **न्यूनतम साझा कार्यक्रम (CMP)** के द्वारा प्रत्येक बच्चे के व्यक्तित्व के विकास के लिए अनेक गतिविधियों का संचालन किया जाता है। केंद्रीय विद्यालय में विद्यार्थियों के शैक्षणिक क्षेत्र के साथ-साथ सह-शैक्षणिक क्षेत्र के विकास के लिए भी समय-समय पर अनेक गतिविधियों का संचालन किया जाता है। केंद्रीय विद्यालय में आनंदवार , गतिविधि आधारित अधिगम तथा छात्र-केंद्रित अधिगम आदि पर जोर दिया जाता है।

केंद्रीय विद्यालय , बलरामपुर में प्रारंभिक स्तर पर शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया के दौरान अथवा विद्यार्थियों के व्यक्तित्व के विकास के लिए आयोजित की जाने वाली गतिविधियों का नमूना इस प्रकार है : -

दादा - दादी / नाना - नानी दिवस

बाल - मेला

योग - दिवस

सदन बोर्ड सजावट प्रतियोगिता

जन्मदिन कार्ड वितरण

मुखौटा निर्माण प्रतियोगिता

वार्षिक खेलकूद दिवस

नौका दौड़ प्रतियोगिता